



ॐ अमेश्वरनाथ सेवा संघ
अमांव, बलिया, उत्तर प्रदेश-277501
Social, Cultural Institution & Trust
www.ameshwarnathsewasangh.com



मुख्य कार्यालय : आमेश्वरनाथ धाम , अमांव , बलिया , उत्तर प्रदेश -277501,

आपातकालीन सम्पर्क सूत्र -7753955951,

रजि० 187/2019

पत्रांक: ANSS/135/251026

दिनांक :25-10-2026



छठ पूजा का महत्व और विधि

छठ पूजा के नहाय-खाय का नियम

(13 नवंबर 2026, शुक्रवार)



व्रती सुबह किसी पवित्र नदी या तालाब में स्नान करती हैं, या घर पर ही स्नान करती हैं, फिर शुद्ध सात्विक भोजन जैसे लौकी-चावल और चने की दाल खाती हैं। इस दिन घर और रसोई को पूरी तरह साफ रखा जाता है, और भोजन में लहसुन-प्याज व किसी भी मसाले का प्रयोग वर्जित होता है। भोजन मिट्टी के बर्तन में पकाया जाता है और सिर्फ व्रती ही पहले भोजन ग्रहण करती हैं, फिर परिवार के अन्य लोग।

नहाय-खाय की प्रक्रिया:

- ✓ **स्नान:** सुबह के व्रत में किसी पवित्र नदी या तालाब में स्नान किया जाता है। यदि यह संभव नहीं है, तो घर पर ही स्नान करके नये वस्त्र पहने जाते हैं।
- ✓ **रसोई की सफाई:** स्नान के बाद घर की और विशेष रूप से रसोई की अच्छी सफाई की जाती है।
- ✓ **संकल्प और पूजा:** व्रती मन से छठ पूजा के व्रत का संकल्प लेते हैं और भगवान सूर्य और छठ मैया की पूजा करते हैं।

सात्विक भोजन तैयार करना:

- ✓ **सामग्री:** कच्चे चावल का भात, चने की दाल और लौकी (या कद्दू) की सब्जी तैयार की जाती है।
- ✓ **बर्तन:** इस भोजन को मिट्टी या कांसे के बर्तनों में पकाया जाता है।
- ✓ **नियम:** इस दिन सेंधा नमक का प्रयोग होता है और
 - * लहसुन-प्याज व किसी भी तरह का साधारण प्रयोग नहीं होता है।
- ✓ **भोजन ग्रहण करना:** सबसे पहले तैयार सात्विक भोजन का भोग सूर्यदेव और छठ मैया को माना जाता है, इसके बाद व्रती खुद भोजन ग्रहण करती हैं और फिर परिवार के अन्य सदस्य।

नहाय-खाय का महत्व:

- ✓ यह छठ पूजा का पहला दिन होता है और पर्व की शुरुआत का प्रतीक है।
- ✓ इस दिन व्रती सात्विक भोजन ग्रहण कर खुद को पवित्र और पवित्र मानते हैं, जिससे सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।
- ✓ नहाय-खाय का उद्देश्य मन और शरीर को शुद्ध करके पर्व के लिए तैयार करना है।

॥विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ॥

॥अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥



ॐ अमेश्वरनाथ सेवा संघ
अमांव, बलिया, उत्तर प्रदेश-277501
Social, Cultural Institution & Trust
www.ameshwarnathsewasangh.com



मुख्य कार्यालय : आमेश्वरनाथ धाम , अमांव , बलिया , उत्तर प्रदेश -277501,

आपातकालीन सम्पर्क सूत्र -7753955951,

रजि० 187/2019

छठ पूजा के खरना का नियम

(14 नवंबर 2026, शनिवार)

खरना की विधि में, व्रती महिला या पुरुष दिनभर का निर्जला उपवास रखते हैं, शाम को मिट्टी के चूल्हे पर गुड़, दूध और चावल से बनी खीर, घी लगी रोटी और फल का प्रसाद बनाते हैं। इस प्रसाद को पहले छठी मैया को अर्पित किया जाता है, फिर स्वयं ग्रहण किया जाता है, जिसके बाद ही यह दूसरों में बांटा जाता है। इसी प्रसाद ग्रहण करने के बाद 36 घंटे का कठिन निर्जला उपवास शुरू होता है, जो उगते सूर्य को अर्घ्य देने के बाद ही समाप्त होता है।

खरना की विधि:

- ✓ **नहाय-खाय के बाद:** नहाय-खाय के अगले दिन, यानी कार्तिक शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि पर खरना मनाया जाता है।
- ✓ **पूजा की तैयारी:** शाम को, व्रती नदी या तालाब में स्नान करके, शुद्ध और साफ वस्त्र पहनते हैं।
- ✓ **भोग की तैयारी:** व्रती मिट्टी के चूल्हे पर चावल, दूध और गुड़ को मिलाकर खीर बनाते हैं। इसके साथ ही घी लगी रोटी और फल भी तैयार किए जाते हैं।
- ✓ **भगवान को अर्पित करना:** तैयार भोग को सबसे पहले विधि-विधान से पूजा करने के बाद छठी मैया को अर्पित किया जाता है।
- ✓ **प्रसाद ग्रहण:** इसके बाद व्रती स्वयं उस प्रसाद को ग्रहण करते हैं। बाँटना: ग्रहण करने के बाद, बाकी प्रसाद परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों में बांटा जाता है।
- ✓ **निर्जला उपवास का आरंभ:** खरना के बाद से ही 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू हो जाता है।

राष्ट्र देवो भवः

॥विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ॥

॥अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥



अमेश्वरनाथ सेवा संघ
अमांव, बलिया, उत्तर प्रदेश-277501
Social, Cultural Institution & Trust
www.ameshwarnathsewasangh.com



मुख्य कार्यालय : आमेश्वरनाथ धाम , अमांव , बलिया , उत्तर प्रदेश -277501,

आपातकालीन सम्पर्क सूत्र -7753955951,

रजि० 187/2019



छठ पूजा संध्या अर्घ्य (सूर्य षष्ठी) की विधि: (15 नवंबर 2026, रविवार)



छठ पूजा के तीसरे दिन अर्थात कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को संध्याकाल में अस्ताचल सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया जाता है। यह छठ महापर्व का अत्यंत महत्वपूर्ण अनुष्ठान है।

पूजा की विधि

प्रसाद की तैयारी: सबसे पहले बाँस के सूप एवं दउरा में पूजा की सामग्री सजाएँ। इसमें ठेकुआ, चावल के लड्डू, विभिन्न प्रकार के फल, नारियल, गन्ना और अन्य पारंपरिक प्रसाद रखें।

- ✓ **अर्घ्य पात्र तैयार करना:** एक लोटे में स्वच्छ जल भरें।
- ✓ **पूजन सामग्री मिलाना:** परंपरा के अनुसार जल में कच्चे दूध की कुछ बूंदें, लाल चंदन, फूल, अक्षत (बिना टूटे चावल) एवं कुश डालें।
- ✓ **जल में खड़े होना:** व्रती नदी, तालाब या अन्य निर्धारित जल स्रोत में सुरक्षित स्थान पर खड़े होकर सूर्यदेव का ध्यान करें।
- ✓ **अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य:** सूर्यास्त के समय लोटे से धीरे-धीरे जल की धारा प्रवाहित करते हुए भगवान सूर्यदेव को अर्घ्य अर्पित करें।
- ✓ **मंत्रोच्चार एवं प्रार्थना:** सूर्यदेव के मंत्रों का जाप करें और छठी मैया से परिवार की सुख-समृद्धि एवं कल्याण की प्रार्थना करें।
- ✓ **प्रसाद अर्पित करना:** बाँस के सूप में रखे फल, ठेकुआ, नारियल, गन्ना एवं अन्य प्रसाद श्रद्धापूर्वक अर्पित करें।
- ✓ **परिवार की मंगलकामना:** परिवार के सभी सदस्य श्रद्धापूर्वक भगवान सूर्यदेव एवं छठी मैया को प्रणाम करें और आशीर्वाद प्राप्त करें।

इस पूजा का धार्मिक एवं सामाजिक महत्व

- अस्त होते सूर्य का सम्मान: जीवन के प्रत्येक पड़ाव का सम्मान करना।
- परिवार की खुशहाली: संतान की दीर्घायु, स्वास्थ्य एवं सुख-समृद्धि की कामना।
- प्रकृति संरक्षण: प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति कृतज्ञता।
- सामाजिक एकता: समाज में सहयोग, भाईचारे और समानता की भावना को बढ़ावा देना।

॥विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः॥

॥अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम्॥



आमेश्वरनाथ सेवा संघ
अमांव, बलिया, उत्तर प्रदेश-277501
Social, Cultural Institution & Trust
www.ameshwarnathsewasangh.com



मुख्य कार्यालय : आमेश्वरनाथ धाम , अमांव , बलिया , उत्तर प्रदेश -277501,

आपातकालीन सम्पर्क सूत्र -7753955951,

रजि० 187/2019



छठ पूजा प्रातः अर्घ्य (सूर्य षष्ठी) विधिः (16 नवंबर 2026, सोमवार)



छठ पूजा के चौथे और अंतिम दिन प्रातःकाल उगते हुए सूर्यदेव को अर्घ्य दिया जाता है। इस दिन पूजा की विधि निम्नलिखित है:-

- ✓ **स्नान एवं तैयारी:** प्रातःकाल उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजा स्थल और प्रसाद की सामग्री को व्यवस्थित करें।
- ✓ **घाट पर पहुँचना:** परिवार एवं अन्य श्रद्धालुओं के साथ सूर्योदय से पहले नदी, तालाब या निर्धारित छठ घाट पर पहुँचें।
- ✓ **जल में खड़े होकर पूजा:** व्रती स्वच्छ एवं सुरक्षित जल में खड़े होकर भगवान सूर्यदेव और छठी मैया का ध्यान करें।
- ✓ **अर्घ्य की तैयारी:** पूजा की परंपरा के अनुसार लोटे में स्वच्छ जल लें। आवश्यकतानुसार दूध, फूल, अक्षत और लाल चंदन आदि रखें।
- ✓ **सूर्यदेव को अर्घ्य अर्पित करना:** उगते हुए सूर्य की ओर मुख करके श्रद्धापूर्वक जल अर्पित करें तथा सूर्यदेव के मंत्रों का जाप करें।
- ✓ **प्रसाद अर्पित करना:** भगवान सूर्यदेव को ठेकुआ, फल, नारियल, गन्ना और अन्य पारंपरिक प्रसाद अर्पित करें।
- ✓ **छठी मैया की आराधना:** छठी मैया को प्रणाम करें और संतान की दीर्घायु, परिवार के स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि एवं कल्याण की कामना करें।
- ✓ **व्रत का पारण:** पूजा संपन्न होने के बाद व्रती परिवार के सदस्यों और श्रद्धालुओं के साथ प्रसाद ग्रहण करके अपना 36 घंटे का निर्जला व्रत पारण करते हैं।
- ✓ **प्रसाद एवं सामग्री का वितरण:** पूजा का प्रसाद परिवार, रिश्तेदारों, पड़ोसियों और अन्य श्रद्धालुओं में श्रद्धापूर्वक वितरित करें।

॥विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ॥

॥अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥



आमेश्वरनाथ सेवा संघ
अमांव, बलिया, उत्तर प्रदेश-277501
Social, Cultural Institution & Trust
www.ameshwarnathsewasangh.com



मुख्य कार्यालय : आमेश्वरनाथ धाम , अमांव , बलिया , उत्तर प्रदेश -277501,

आपातकालीन सम्पर्क सूत्र -7753955951,

रजि० 187/2019

छठ पूजा क्यों मनाई जाती है:

सूर्य देव के प्रति आभार: यह त्यौहार सूर्य देव को समर्पित है, जो सभी प्राणियों के जीवन का आधार माने जाते हैं। भक्त सूर्य देव को अर्घ्य देकर कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

छठी मैया की पूजा: सूर्य देव की बहन, जिन्हें छठी मैया या षष्ठी देवी भी कहा जाता है, उनकी पूजा की जाती है। माना जाता है कि वे संतान की रक्षा करती हैं और उन्हें दीर्घायु बनाती हैं।

संतान प्राप्ति व सुरक्षा: पुत्र-पुत्री प्राप्ति, संतान के उत्तम स्वास्थ्य और परिवार की सुरक्षा के लिए छठ पूजा की जाती है।

प्रकृति से जुड़ाव: यह पर्व हमें प्रकृति के साथ हमारे संबंध और उसके प्रति आभार व्यक्त करना सिखाता है।

पौराणिक कथाएं:

द्रौपदी और कर्ण: एक कथा के अनुसार, महाभारत काल में पांडवों की पत्नी द्रौपदी और सूर्यपुत्र कर्ण ने अपने परिजनों के अच्छे स्वास्थ्य और लंबी उम्र के लिए सूर्य देव की पूजा की थी।

छठ पूजा का इस कथा से संबंध

छठ पूजा भारत के प्राचीनतम एवं पवित्र लोकपर्वों में से एक है। यह पर्व मुख्य रूप से भगवान सूर्यदेव और छठी मैया को समर्पित है। विशेष रूप से बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड तथा देश के विभिन्न हिस्सों में इसे अत्यंत श्रद्धा, पवित्रता और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

छठ पूजा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, पारिवारिक परंपरा, मातृत्व, त्याग, तपस्या, अनुशासन और सामाजिक एकता का प्रतीक है। इस पर्व में व्रती कठिन नियमों का पालन करते हुए संतान की दीर्घायु, परिवार के उत्तम स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि और संपूर्ण परिवार के कल्याण की कामना करते हैं।

इस पर्व की सबसे विशेष बात यह है कि इसमें डूबते हुए सूर्य और उगते हुए सूर्य दोनों को अर्घ्य अर्पित किया जाता है। यह परंपरा हमें जीवन के प्रत्येक पड़ाव का सम्मान करना सिखाती है। सूर्यदेव को संपूर्ण सृष्टि का जीवनदाता माना जाता है। उनके प्रकाश और ऊर्जा से ही पृथ्वी पर जीवन संभव है। इसलिए इस पर्व में सूर्यदेव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है।

छठ पूजा के संबंध में अनेक पौराणिक कथाएँ एवं धार्मिक मान्यताएँ प्रचलित हैं। इन कथाओं में संतान की रक्षा, आरोग्य, पारिवारिक खुशहाली, श्रद्धा, तपस्या और प्रकृति के प्रति सम्मान का विशेष महत्व बताया गया है।

छठ पूजा से संबंधित प्रमुख कथाएँ निम्नलिखित हैं:-

॥विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ॥

॥अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥



आमेश्वरनाथ सेवा संघ
अमांव, बलिया, उत्तर प्रदेश-277501
Social, Cultural Institution & Trust
www.ameshwarnathsewasangh.com



मुख्य कार्यालय : आमेश्वरनाथ धाम , अमांव , बलिया , उत्तर प्रदेश -277501,

आपातकालीन सम्पर्क सूत्र -7753955951,

रजि० 187/2019

देव माता अदिति और छठ पूजा की पौराणिक कथा

प्राचीन काल की बात है। जब देवताओं और असुरों के बीच भयंकर युद्ध हुआ, तब इस युद्ध में देवताओं को पराजय का सामना करना पड़ा। देवताओं की हार से माता अदिति अत्यंत दुखी हुई। उन्हें अपने पुत्रों की चिंता सताने लगी।

अपने पुत्रों की रक्षा और देवताओं के कल्याण के लिए माता अदिति ने भगवान सूर्यदेव तथा छठी मैया की आराधना करने का संकल्प लिया।

लोकमान्यता के अनुसार, माता अदिति ने बिहार के प्रसिद्ध देवार्क सूर्य मंदिर में संतान की प्राप्ति और अपने पुत्रों की रक्षा के लिए कठिन तपस्या की।

उनकी कठोर तपस्या और अटूट श्रद्धा से प्रसन्न होकर छठी मैया ने उन्हें एक तेजस्वी पुत्र प्राप्त होने का वरदान दिया।

कालांतर में माता अदिति के गर्भ से भगवान आदित्य का प्राकट्य हुआ। भगवान आदित्य ने अपनी दिव्य शक्ति और तेज से देवताओं को असुरों के विरुद्ध विजय प्राप्त करने में सहायता की। इस प्रकार देवताओं को पुनः सुख, शांति और सम्मान प्राप्त हुआ।

॥विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ॥

॥अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥



आमेश्वरनाथ सेवा संघ
अमांव, बलिया, उत्तर प्रदेश-277501
Social, Cultural Institution & Trust
www.ameshwarnathsewasangh.com



मुख्य कार्यालय : आमेश्वरनाथ धाम , अमांव , बलिया , उत्तर प्रदेश -277501,

आपातकालीन सम्पर्क सूत्र -7753955951,

रजि० 187/2019

रामायण काल में छठ पूजा की पौराणिक कथा

- ❖ छठ पूजा से जुड़ी एक प्रचलित धार्मिक मान्यता रामायण काल से भी संबंधित है।
- ❖ कहा जाता है कि जब भगवान श्रीराम 14 वर्षों का वनवास पूरा करके तथा रावण का वध करके माता सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे, तब उनके राज्याभिषेक की तैयारियाँ की गईं।
- ❖ रावण का वध करने के बाद धार्मिक परंपराओं के अनुसार भगवान श्रीराम ने ऋषि-मुनियों के मार्गदर्शन में यज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठान किए।

माता सीता ने मुंगेर में की थी सूर्य उपासना

- ❖ लोकमान्यता के अनुसार, अयोध्या लौटने के बाद भगवान श्रीराम और माता सीता ने ऋषि-मुनियों के निर्देश पर सूर्यदेव की उपासना का संकल्प लिया।
- ❖ इस कथा का संबंध बिहार के मुंगेर स्थित सीताचरण से भी जोड़ा जाता है।
- ❖ कहा जाता है कि मुग्दल ऋषि ने माता सीता को अपने आश्रम में आमंत्रित किया। उन्होंने गंगाजल से माता सीता का शुद्धिकरण किया और कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में सूर्यदेव की उपासना करने का निर्देश दिया।
- ❖ माता सीता ने छह दिनों तक सूर्यदेव की आराधना की और षष्ठी तिथि को विशेष पूजा-अर्चना की। सप्तमी को उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देकर अपना अनुष्ठान पूर्ण किया।
- ❖ मान्यता है कि तभी से छठ पूजा की परंपरा को रामायण काल से जोड़कर देखा जाता है।

इस कथा का महत्व

इस कथा से हमें कई संदेश मिलते हैं:

1. सूर्यदेव संपूर्ण संसार के जीवनदाता हैं।
2. कठिन परिस्थितियों में भी श्रद्धा और विश्वास बनाए रखना चाहिए।
3. प्रकृति और जल के प्रति सम्मान रखना चाहिए।
4. परिवार, समाज और संपूर्ण मानवता के कल्याण की कामना करनी चाहिए।
5. अस्त होते और उगते सूर्य दोनों को सम्मान देना चाहिए।

एक विशेष बात: यह रामायण काल से जुड़ी प्रचलित लोकमान्यता है। इसे वाल्मीकि रामायण में वर्णित प्रमाणित प्रसंग नहीं मानना चाहिए।

॥विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ॥

॥अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥



आमेश्वरनाथ सेवा संघ
अमांव, बलिया, उत्तर प्रदेश-277501
Social, Cultural Institution & Trust
www.ameshwarnathsewasangh.com



मुख्य कार्यालय : आमेश्वरनाथ धाम , अमांव , बलिया , उत्तर प्रदेश -277501,

आपातकालीन सम्पर्क सूत्र -7753955951,

रजि० 187/2019

श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब और सूर्य उपासना की पौराणिक कथा

- ❖ द्वापर युग की बात है। भगवान श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब अत्यंत सुंदर और तेजस्वी थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार, एक समय साम्ब कुष्ठ रोग से पीड़ित हो गए। उन्होंने इस रोग से मुक्ति पाने के लिए अनेक प्रयास किए, लेकिन उन्हें राहत नहीं मिली।
- ❖ अपने पुत्र की पीड़ा देखकर भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें भगवान सूर्यदेव की उपासना करने की सलाह दी। श्रीकृष्ण ने बताया कि सूर्यदेव आरोग्य और जीवनशक्ति के प्रतीक हैं। उनकी सच्चे मन से आराधना करने से रोगों से मुक्ति का आशीर्वाद प्राप्त हो सकता है।
- ❖ पिता की सलाह मानकर साम्ब ने भगवान सूर्यदेव की कठिन तपस्या और विधि-विधान से पूजा-अर्चना शुरू की, उन्होंने लंबे समय तक सूर्यदेव की आराधना की।
- ❖ साम्ब की अटूट श्रद्धा और तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान सूर्यदेव ने उन्हें रोगमुक्त होने का आशीर्वाद दिया। लोकमान्यता के अनुसार, सूर्यदेव की कृपा से साम्ब कुष्ठ रोग से मुक्त हो गए।
- ❖ स्वस्थ होने के बाद साम्ब ने भगवान सूर्यदेव के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए 12 सूर्य मंदिरों का निर्माण करवाया , इस कथा का संबंध भारत के प्रसिद्ध सूर्य मंदिरों की परंपरा से भी जोड़ा जाता है। इनमें ओडिशा का प्रसिद्ध कोणार्क सूर्य मंदिर और बिहार के औरंगाबाद जिले का देव सूर्य मंदिर विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

इस कथा का छठ पूजा से संबंध

इस पौराणिक कथा से सूर्यदेव की उपासना का महत्व समझाया जाता है। छठ पूजा में भी श्रद्धालु भगवान सूर्यदेव से अच्छे स्वास्थ्य, दीर्घायु, सुख-समृद्धि और परिवार के कल्याण की कामना करते हैं।

राष्ट्र देवो भवः

॥विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ॥

॥अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥



आमेश्वरनाथ सेवा संघ
अमांव, बलिया, उत्तर प्रदेश-277501
Social, Cultural Institution & Trust
www.ameshwarnathsewasangh.com



मुख्य कार्यालय : आमेश्वरनाथ धाम , अमांव , बलिया , उत्तर प्रदेश -277501,

आपातकालीन सम्पर्क सूत्र -7753955951,

रजि० 187/2019

राजा प्रियव्रत और छठी मैया की पौराणिक कथा

प्राचीन काल की बात है। स्वायंभुव मनु के पुत्र राजा प्रियव्रत एक प्रतापी, धर्मपरायण और प्रजावत्सल राजा थे। उनकी पत्नी का नाम रानी मालिनी था। राजा के पास धन-दौलत, राजपाट और सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं थी, लेकिन उनके जीवन में एक गहरा दुख था। उन्हें संतान सुख प्राप्त नहीं हुआ था।

राजा और रानी संतान प्राप्ति के लिए सदैव चिंतित रहते थे। उन्होंने अनेक धार्मिक अनुष्ठान किए और ऋषि-मुनियों से मार्गदर्शन प्राप्त किया। एक दिन महर्षि कश्यप राजा के महल में पधारे। राजा ने उनके सामने अपनी संतानहीनता का दुख व्यक्त किया। महर्षि ने उन्हें पुत्र प्राप्ति के लिए विशेष यज्ञ कराने की सलाह दी।

महर्षि कश्यप के मार्गदर्शन में यज्ञ संपन्न हुआ। यज्ञ के प्रभाव से रानी मालिनी गर्भवती हुई और निर्धारित समय पर उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया। लेकिन दुर्भाग्यवश बालक मृत पैदा हुआ। यह देखकर राजा और रानी पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। राजमहल में खुशियों के स्थान पर शोक छा गया।

राजा प्रियव्रत अपने मृत पुत्र को देखकर अत्यंत व्याकुल हो उठे। वे अपने पुत्र के शव को लेकर श्मशान पहुंचे और विलाप करने लगे। उसी समय आकाश में एक दिव्य प्रकाश प्रकट हुआ। उस प्रकाश के मध्य एक तेजस्वी देवी प्रकट हुई।

देवी ने राजा से कहा, "हे राजन! मैं ब्रह्मा जी की मानस पुत्री देवसेना हूँ। संसार में मुझे षष्ठी देवी के नाम से जाना जाता है। मैं संतान की रक्षा करने वाली और बच्चों को सुख-समृद्धि प्रदान करने वाली देवी हूँ।"

राजा ने देवी के चरणों में नमन किया और अपने पुत्र के जीवन की प्रार्थना की। राजा की श्रद्धा और करुण पुकार से प्रसन्न होकर देवी ने मृत बालक को जीवनदान प्रदान किया। अपने पुत्र को जीवित देखकर राजा और रानी की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा।

देवी ने राजा को निर्देश दिया कि वे षष्ठी देवी की पूजा करें और उनकी महिमा का प्रचार करें, ताकि संसार के लोग भी संतान की प्राप्ति, संतान की रक्षा और परिवार के कल्याण के लिए उनकी आराधना कर सकें।

राजा प्रियव्रत ने देवी के निर्देशानुसार श्रद्धापूर्वक पूजा-अर्चना की और पूरे राज्य में षष्ठी देवी की महिमा का प्रसार किया।

॥विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ॥

॥अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥



आमेश्वरनाथ सेवा संघ
अमांव, बलिया, उत्तर प्रदेश-277501
Social, Cultural Institution & Trust
www.ameshwarnathsewasangh.com



मुख्य कार्यालय : आमेश्वरनाथ धाम , अमांव , बलिया , उत्तर प्रदेश -277501, आपातकालीन सम्पर्क सूत्र -7753955951, रजि० 187/2019

इस कथा का छठ पूजा से संबंध

धार्मिक मान्यता के अनुसार, षष्ठी देवी को ही छठी मैया के रूप में पूजा जाता है। तभी से संतान की प्राप्ति, संतान की दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य और परिवार की सुख-समृद्धि के लिए छठी मैया की आराधना की परंपरा प्रचलित मानी जाती है।

छठ पूजा में माताएँ अपनी संतान की खुशहाली और परिवार के मंगल के लिए कठिन व्रत रखती हैं। भगवान सूर्यदेव को अर्घ्य अर्पित करके संपूर्ण सृष्टि के जीवनदाता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हैं।

इस कथा से मिलने वाली शिक्षा

- माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम और समर्पण सर्वोपरि है।
- श्रद्धा, विश्वास, धैर्य और तपस्या का विशेष महत्व है।
- बच्चों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और उज्ज्वल भविष्य के लिए सदैव मंगलकामना करनी चाहिए।
- परिवार के साथ-साथ संपूर्ण समाज के कल्याण की भावना रखनी चाहिए।

छठ पूजा केवल संतान की सुख-समृद्धि का पर्व नहीं, बल्कि मातृत्व, त्याग, तपस्या, अटूट आस्था और पारिवारिक प्रेम का महापर्व है।

जय छठी मैया! जय सूर्यदेव! जय छठी मैया! जय सूर्यदेव! जय छठी मैया! जय सूर्यदेव!

राष्ट्र देवो भवः

Shivari
शुभम तिवारी/Shubham Tiwari
आचार्य /Acharya
ट्रस्ट के प्रमुख/Head Of Trust
आमेश्वरनाथ सेवा संघ ट्रस्ट, अमांव, बलिया, यू०पी०
(Ameshwarnath Sewa Sangh Trust, Amaon, Ballia, (U.P.)
रजि० १८७/१३/Reg.No.187/19

॥विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ॥

॥अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥